सास्त्रें आवरदा कही कलजुग की, चार लाख बत्तीस हजार।
काटे दिन पापें लिख्या मांहें सास्त्रों, सो पाइए अर्थ अंदर के विचार।। १७ ।।

शास्त्रों में कलियुग की आयु चार लाख बत्तीस हजार वर्ष बताई गयी है जो पाप के कारण घट गई है। इसका शास्त्र विचारने से पता लगता है।

सोले सै लगे रे साका सालवाहन का, संवत सत्रह सै पैंतीस।
बैठाने साका विजिया अभिनन्दका, यों कहे सास्त्र और जोतीस।। १८ ।।

शाका शालिवाहन का सोलह सौ और विक्रम सम्वत् सत्रह सौ पैंतीस लग गया है। अब ज्योतिष और शास्त्रों के हिसाब से विजियाभिनन्द बुधजी का शाका शुरू हो गया है।

कलिजुगें चेहेन रे अंत के सब किए, लोक बतावें अजूं दूर अंत।
अर्थ अंदर का कोई न पावे, बारे अर्थ बाहेर के ले डूबत।। १९ ।।

कलियुग के समाप्त होने के सभी निशान प्रकट हो गए हैं। संसार के लोग कहते हैं कि अभी कलियुग का अन्त दूर है। यह बाहरी अर्थ लेकर डूब रहे हैं। अन्दर का अर्थ यह नहीं लेते।

बातने सुनी रे बुंदेले छत्रसाल ने, आगे आए खड़ा ले तरवार।
सेवाने लई रे सारी सिर खैंच के, सांइए किया सैन्यापति सिरदार।। २० ।।

इस बात को बुंदेला छत्रसाल ने सुना और धर्म-युद्ध के लिए तलवार लेकर आगे आए। सारी सेवा औरंगजेब से लड़ने की अपने सिर ले ली। श्री प्राणनाथजी ने राजतिलक करके उसे सेना का राजा बना दिया।

प्रगटे निसान रे धूमरकेतु खय मास, पर सुध न करे अजूं कोई इत।
बेगेने पधारो रे बुध जी या समे, पुकार कहे महामत।। २१ ।।

विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार के प्रगट होने का निशान धूमकेतु तारा जाहिर हो गया है। एक मास का क्षय भी हुआ है, परन्तु फिर भी कोई विचार नहीं कर रहा है। महामति जी पुकार कर कहते हैं, हे बुधजी! आप शीघ्र ही प्रगट होइए।

।। प्रकरण ।। ५८ ।। चौपाई ।। ६५९ ।।

राग श्री

ऐसा समे जान आए बुध जी, कर कोट सूर समसेर।
सुनते सोर सब्द बानन को, होए गए सब जेर।। १ ।।

भारतवर्ष में हिन्दू धर्म की ऐसी विकट परिस्थिति में पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी करोड़ों सूर्य से भी अधिक तेज वाली जागृत बुद्धि (तारतम वाणी) की तलवार लेकर आए। जिनकी सत वाणी के शब्दों के शोर से सब धर्माचार्य परास्त हो गए।

काटे विकार सब असुरों के, उड़ायो हिरदे को अंधेर।
काढ़यो अहंकार मूल मोह मन को, भान्यो सो उलटो फेर।। २ ।।

मुसलमानों के दिलों के भी अज्ञानता रूपी अन्धेरे को मिटाकर उनके अहंकार रूपी विकारों को जड़ से समाप्त कर दिया और उनकी उलटी चाल (तलवार के डर से मुसलमान बनाना) को सीधा कर दिया।

Nijanand App

वेद कतेब के जो अर्थ, ढांपे हुते सबों पास।
विष्णु संग्राम मांगे जो असुर, ताको कियो कोट प्रकास।। ३ ।।

वेदों और कतेबों (चारों वेद, शास्त्र तथा अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान) के रहस्य जो किसी को मालूम नहीं थे तथा जिनके लिए औरंगजेब धर्म-युद्ध की मांग कर रहा था, इन सबके भेदों को इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) ने तारतम वाणी के ज्ञान से जाहिर किया।

तब पेहेचान भई सकल, हुए सब सर्वग्यन।
नेहेचल सूर ऊग्यो निज वतनी, हुओ मन को भायो सबन।। ४ ।।

अब सभी को छिपे रहस्यों की पहचान हो गई और सब ज्ञानी हो गए। परमधाम के ज्ञान का अखण्ड सूर्य जाहिर हो गया और इस ज्ञान से सबकी इच्छा पूरी हो गई।

बाल लीला भई बृज में, लीला किसोर वृन्दावन।
जगंनाथ बुध जी जागनी, भई भोर लीला बुढ़ापन।। ५ ।।

बृज में बाल लीला हुई। वृन्दावन में किशोर लीला हुई। जागृत ज्ञान के स्वरूप जगत के मालिक श्री प्राणनाथजी की जागनी की लीला बुढ़ापे की है जिससे ज्ञान का सवेरा हो गया।

राजा प्रजा बाला बूढ़ा, नर नारी ए सुमरन।
गाए सुने ताए होवहीं, लीला तीनों का दरसन।। ६ ।।

अब राजा-प्रजा, बालक-बूढ़ा, स्त्री-पुरुष जो भी इस तारतम वाणी को समझकर रहनी में आएगा, उसे तीनों लीलाओं का सुख प्राप्त होगा।

सुर असुर सबों को ए पति, सब पर एकै दया।
देत दीदार सबन को सांईं, जिनहूं जैसा चाह्या।। ७ ।।

हिन्दू और मुसलमान सबों के श्री प्राणनाथजी धनी हैं। वह सब पर एक ही नजरे करम करते हैं। जिसने उनको जिस तरह से पहचाना उसको श्री प्राणनाथजी उसी रूप से मिलते हैं।

साहेब के हुकमें ए बानी, गावत हैं महामत।
निज बुध नूर जोस को दरसन, सबमें ए पसरत।। ८ ।।

श्री प्राणनाथजी के हुकम से श्री महामतिजी इस वाणी को जाहिर कर रही हैं। अब जागृत बुद्धि के तेज और जोश का ज्ञान सबमें फैल रहा है।

।। प्रकरण ।। ५९ ।। चौपाई ।। ६६७ ।।

राग श्री गौड़ी

कुली बल देखो रे, ए जो देखन आइयां तुम।
खेल किया तुमारी खातिर, सुनियो हो सृष्ट ब्रह्म।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस कलियुग की शक्ति को देखो। जिसे देखने के लिए तुम आए हो। हे ब्रह्मसृष्टियो! सुनो, यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है।

अथाह थाह नहीं ऊंचा नीचा, गेहेरा गिरदवाए मोह जल।
लोक चौदे खेलें जीव याके, याकी सूझे न याकी कल।। २ ।।

इस भवसागर की थाह नहीं मिलती। यह बहुत ऊंचा-नीचा है और चारों तरफ से गहरा है। चौदह लोकों के जीव इसमें खेलते हैं। इसकी हकीकत का पता नहीं है।

Nijanand App